

बदलती युवा चर्चाएँ और आकांक्षाएँ

प्रलिस के लयः

भारत में युवा 2022 रपॉरट, Y20 शखर सममेलन, बेरोज़गारी, कृष उतपादकता, जनसांख्यकीय लाभांश

मेन्स के लयः

भारत में युवा जनसंख्या से संबंघत अवसर और चुनौतयिँ

चर्चा में क्यौं?

भारत के 18 राज्यों में लोकनीतःCSDS का एक हालयिा सर्वेक्षण युवा चर्चाओं और आकांक्षाओं के लगातार परविरतति होते परदृश्य में युवा आबादी की बदलती प्राथमकताओं पर प्रकाश डालता है ।

- यह सर्वेक्षण प्रमुख मुद्दों के रूप में बेरोज़गारी और मूल्य वृद्धि की बढ़ती चुनौतयिँ, आर्थिक वर्गों और लयि के साथ इन चर्चाओं का अंतरसंबंध तथा नौकरी की आकांक्षाओं की उभरती प्राथमकताओं पर ध्यान आकर्षत करता है ।

इस सर्वेक्षण की प्रमुख बार्तें:

- बेरोज़गारी, मूल्य वृद्धि और लैंगक असमानता:**
 - प्राथमक चर्चा के रूप में मूल्य वृद्धि की पहचान करने वाले उततरदाताओं की हसिसेदारी में 7% अंक की वृद्धि हुई ।
 - 40% उच्च शकषत उततरदाताओं (सनातक तथा उसके ऊपर) ने बेरोज़गारी को सबसे गंभीर चर्चा के रूप में इंगत कयिा है ।
 - 27% गैर-साक्षर वयकतयि, जो कसिी भी प्रकार के काम की तलाश में थे, उनहोंने बेरोज़गारी को लेकर चर्चा वयकत की ।
 - गरीबी और महँगाई युवा महलियाओं के लयि प्रमुख मुद्दों के रूप में उभरे, चाहे उनकी आर्थक पृष्ठभूमि कुछ भी हो ।
- व्यावसायक ववधितः युवा रोज़गार पर अंतरदृष्टः**
 - लगभग आधे (49%) उततरदाता कसिी-न-कसिी काम में लगे हुए थे ।
 - 40% का पास पूर्णकालक रोज़गार था, जबक 9% अंशकालक रोज़गार में संगलग्न थे ।
 - नयोजत युवाओं में से 23% स्व-रोज़गार वाले थे, जो एक महत्त्वपूर्ण उदयमशीलता परवृत्तको प्रदर्शत करता है ।
 - कार्यबल का 16% डॉक्टर और इंजीनयिर जैसे पेशे में थे ।
 - कृष और कुशल शर्म में क्रमशः 15% और 27% लोग शामिल थे ।
- नौकरी की आकांक्षाएँ और प्राथमकताएँ:**
 - 16% युवाओं ने स्वासथ्य कषेत्र में नौकरयिँ को प्राथमकता दी ।
 - शकषा कषेत्र दूसरा सबसे पसंदीदा कषेत्र था, जसि 14% युवाओं ने चुना ।
 - अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के साथ-साथ वज्जान और प्रौद्योगकी से संबंघत नौकरयिँ में से प्रत्येक को 10% समर्थन प्राप्त हुआ ।
 - सरकारी नौकरयिँ का आकर्षण बरकरार रहा, जब सरकारी नौकरी, नजि नौकरी या अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के बीच वकिल्प दयिा गया तो 60% युवाओं ने सरकारी नौकरी को प्राथमकता दी ।
 - स्व-रोज़गार के लयि प्राथमकता वर्ष 2007 के 16% से बढ़कर वर्ष 2023 में 27% हो गई है, जो युवाओं के बीच उदयमशीलता की बढ़ती परवृत्तको दर्शाता है ।

भारत में युवा जनसंख्या से संबंघत अवसर और चुनौतयिँ:

- युवा जनसंख्या की सथतः भारत की 50% से अधिक जनसंख्या 25 वर्ष से कम आयु की है और 65% से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है ।
 - युवा जनसांख्यकीय के मामले में दुनयिा में भारत पाँचवें सथान पर है और यह जनसंख्या लाभ देश के 5 ट्रलियन अमेरिकी डॉलर की

अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिया सकता है।

नोट: युवा आयु समूह की कोई सार्वभौमिक रूप से सहमत अंतरराष्ट्रीय परभाषा नहीं है। भारत की **राष्ट्रीय युवा नीति, 2014** के अनुसार **15 से 29 वर्ष की आयु के व्यक्तियों को युवा माना जाता है**। संयुक्त राष्ट्र की कई संस्थाओं, उपकरणों और क्षेत्रीय संगठनों में युवाओं को अलग-अलग ढंग से परभाषित किया गया है:

Entity/Instrument/ Organization	Age (years)
UN Secretariat/UNESCO/ILO	Youth: 15–24
UN Habitat (Youth Fund)	Youth: 15–32
UNICEF/WHO/UNFPA	Adolescent: 10–19 Young people: 10–24 Youth: 15–24
UNICEF/ The Convention on Rights of the Child	Child under 18
The African Youth Charter	Youth: 15–35

//

■ अवसर:

- मानव पूंजी नविश: भारत की युवा आबादी एक संभावित जनसांख्यिकीय लाभांश है, जिसका अर्थ है कि अगर इसका सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह **आर्थिक विकास** में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।
 - एक युवा आबादी **शिक्षा और कौशल विकास** पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उच्च कुशल कार्यबल तैयार होता है जो विभिन्न उद्योगों की मांग को पूरा कर सकता है।
- नवाचार और उद्यमिता: युवा अधिकतर **नवाचार, नई प्रौद्योगिकियों और उद्यमिता** के लिये तैयार रहते हैं।
 - वे आर्थिक विविधीकरण को बढ़ावा देकर नए उद्योगों और स्टार्ट-अप के विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।
 - इसके अलावा भारत की आबादी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा कृषि कार्य में लगा हुआ है, प्रौद्योगिकी और टिकाऊ तरीकों के माध्यम से खेती की आधुनिक प्रणाली को अपनाकर तथा अनुकूलित कर युवाओं की भागीदारी से **कृषि उत्पादकता में वृद्धि** हो सकती है।
- डिजिटल कनेक्टिविटी: भारत के युवा **तकनीक-प्रेमी** हैं और **डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने एवं बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिया सकते हैं**, जिससे डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में मदद मिलेगी।
- सामाजिक परिवर्तन और सक्रियता: युवा अक्सर **सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन** में सबसे आगे होते हैं।
 - वे सकारात्मक सामाजिक आंदोलन चला सकते हैं, बदलाव की वकालत कर सकते हैं और महत्त्वपूर्ण मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ा सकते हैं।

■ चुनौतियाँ:

- अल्प-रोज़गार और कौशल में असंतुलन: जिस प्रकार बेरोज़गारी पर अक्सर चर्चा की जाती है, वैसे ही अल्प-रोज़गार और कौशल में असंतुलन भी समान रूप से गंभीर मुद्दे हैं। कई युवा भारतीयों को ऐसी नौकरियाँ मिल जाती हैं जो उनके कौशल स्तर से नीचे की होती हैं या उनकी शिक्षा के अनुरूप नहीं होती हैं।
 - इससे न केवल असंतोष उत्पन्न होता है बल्कि उत्पादकता और आर्थिक विकास भी बाधित होता है।
- मानसिक स्वास्थ्य और पूर्वाग्रह: युवाओं में **मानसिक स्वास्थ्य** संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं, फरि भी मदद मांगने से जुड़ा एक पूर्वाग्रह है।
 - यह पूर्वाग्रह **भारतीय समाज में गहराई तक व्याप्त है** और युवाओं के उचित देखभाल में बाधा बन सकता है।
- युवाओं के बीच डिजिटल विभाजन: भारत में एक बड़ी और बढ़ती युवा आबादी है, इसके बावजूद भी डिजिटल प्रौद्योगिकी तक पहुँच अभी भी असमान है।
 - यह डिजिटल विभाजन **शिक्षा, रोज़गार के अवसरों और सूचना तक पहुँच में असमानताएँ उत्पन्न करता है**।
- लैंगिक असमानता और पारंपरिक मानदंड: प्रगतिके बावजूद लैंगिक असमानता एक महत्त्वपूर्ण/सारथक चिंता का विषय बना हुआ है।
 - पारंपरिक मानदंड और पतृसत्तात्मक दृष्टिकोण का प्रभाव युवा **महिलाओं की शिक्षा और रोज़गार पर पड़ता है**।
- राजनीतिक उदासीनता और युवा प्रतिनिधित्व: जनसंख्या का एक पर्याप्त हिस्सा शामिल होने के बावजूद भारत में युवा अक्सर **राजनीतिक प्रक्रिया** से अपने को कटा हुआ महसूस करते हैं।
 - इससे उनकी चिंताओं और आकांक्षाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं होता है।

युवाओं से संबंधित योजनाएँ:

- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना**

- युवा लेखकों को सलाह देने के लिये युवा: प्रधानमंत्री योजना
- समेकित बाल विकास सेवा (ICDS) योजना
- राष्ट्रीय युवा नीति- 2014
- राष्ट्रीय कौशल विकास नगिम
- राष्ट्रीय युवा सशक्तीकरण कार्यक्रम योजना

आगे की राह

- एकीकृत कौशल पारिस्थितिकी तंत्र: भारत को एक व्यापक कौशल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है जो औपचारिक शिक्षा को अनुभवजन्य शिक्षा, प्रशिक्षिता तथा ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के साथ समन्वित करती हो।
- यह कदम सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच के अंतर को कम कर सकता है, जिससे रोजगार में वृद्धि हो सकती है।
- गेमफाइड सविकि एंगेजमेंट प्लेटफॉर्म: युवाओं को नागरिक गतिविधियों और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जोड़े रखने के लिये गेमफाइड मोबाइल एप्लीकेशन विकसित किया जा सकता है।
- नागरिक भागीदारी को एक इंटरैक्टिव अनुभव में बदलकर ये प्लेटफॉर्म अधिक सूचित मतदान को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकते हैं, राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि कर सकते हैं तथा शासन स्वामित्व की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं।
- पारंपरिक शिल्प में उद्यमिता: पारंपरिक शिल्प को आधुनिक डिज़ाइन और वणिगण तकनीकों के साथ एकीकृत करके युवा कारीगरों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- इसमें हस्तशिल्प उत्पादों को ऑनलाइन बेचने के लिये मंच प्रदान करना, ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के लिये आय के साधन की व्यवस्था करते हुए सांस्कृतिक वारिसत को संरक्षित करने का प्रयास शामिल हो सकता है।
- युवा कूटनीति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान: वैश्विक समझ, कूटनीति और सीमा पार मतिरता को बढ़ावा देने के लिये भारत तथा अन्य देशों के युवाओं के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करना भी युवाओं के हित में हो सकता है।
- Y20 शिखर सम्मेलन इसमें अहम भूमिका निभा सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. प्रच्छन्न बेरोजगारी का सामान्यतः अर्थ होता है कि (2013)

- लोग बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार होते हैं
- वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध नहीं है
- श्रम की सीमान्त उत्पादकता शून्य है
- श्रमिकों की उत्पादकता नीची है

उत्तर: (c)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस